2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 2
April - June | ISSN – 2584- 0517

कौटिल्य के संदर्भ में कल्याणकारी अर्थव्यवस्था का भारतीय मॉडल

डॉ. सीमा अग्रवाल
अस्टिंट प्रोफेसर, सेन्ट्रल संस्कृत विश्वविद्यालय

सारांश–

वर्तमान युग की निजीकरण और भोगवादी दर्शन पर आधारित वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था असमानता, असंतोष , बेरोजगारी, संघर्ष एवं अनेक आर्थिक संकटों को जन्म दे रही है। वर्तमान युग की अनेक आर्थिक समस्याओं के समाधान हमें प्राचीन भारतीय चिंतन में विशेष रूप से कौटिल्य की कल्याणकारी अर्थव्यवस्था में दिखाई देते हैं। पूंजीवादी और साम्यवादी मॉडल पर आधारित विकास मॉडलों के अनेक दुष्परिणाम आज हमें दिखाई दे रहे हैं यदि हम कौटिल्य के अर्थशास्त्र के आर्थिक सूत्रों को वर्तमान समय में अनुप्रयोग करें तो यह भारतीयता पर आधारित आर्थिक मॉडल संपूर्ण विश्व को मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

यह शोध पत्र कल्याणकारी आर्थिक नीतियों से संबंधित है जो संपूर्ण समाज के लिए बनाई एवम लागू की जाती है । ये लोक कल्याणकारी नीतियां राजनीतिक स्तर पर बनाई जाती है, अर्थव्यवस्था की क्षमता के आधार पर निर्धारित होती है एवं संपूर्ण समाज पर व्यापक प्रभाव डालती हैं। इस प्रकार यह शोध संपूर्ण समाज एवं समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभों की पहुंच से संबंधित है।

कुंजी प्रत्यय– कल्याणकारी अर्थशास्त्र, योगक्षेम, लोकवित्त, लोक कल्याणकारी योजनाएं, प्रशासनिक अनुशासन

प्रस्तावना–

कल्याणकारी अर्थशास्त्र आर्थिक नीतियों एवं संसाधनों के आवंटन एवं वितरण को सामाजिक कल्याण से संबंधित करता है । इसके अनुसार आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों का इस प्रकार संचालन हो जिससे समाज के सभी लोगों का कल्याण हो एवं उनकी खुशहाली में वृद्धि हो। इस खुशी और कल्याण को आय, रोजगार, उपभोग, धन, स्वास्थ्य ,शिक्षा, बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति, दक्षता निर्माण, कौशल वृद्धि ,मूलभूत सुविधाओं का विस्तार इत्यादि अनेक संकेतकों के संदर्भ में मापा जाता है। कल्याणकारी अर्थशास्त्र के तहत समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच दिलाने के लिए कल्याणकारी योजनाएं लागू की जाती हैं

कल्याणकारी अर्थशास्त्र मुख्यतः कल्याणकारी राज्य की संकल्पना के साथ जुड़ा हुआ है जो नीति निर्माताओं को समाज की सभी लोगों के कल्याण के लिए नीतियां एवं निर्णय लेने के लिए निर्देशित करता है। कल्याणकारी अर्थव्यवस्था की अवधारणा वर्तमान युग में अपेक्षाकृत एक नई अवधारणा है परंतु यदि हम प्राचीन भारतीय विचारक कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित आर्थिक नीतियों का विश्लेषण

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 2
April - June | ISSN – 2584- 0517

करें तो यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में कल्याणकारी आर्थिक नीतियों की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है । समाज के सभी लोगों का योगक्षेम एवम खुशहाली कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य की आर्थिक नीतियों का मुख्य उद्देश्य माना गया है। कौटिल्य ने संपूर्ण राज्य में ऐसी आर्थिक नीतियां बनाई जिनका मुख्य उद्देश्य यह था कि राज्य की आंतरिक सुरक्षा, ग्रामीण और शहरी लोगों को जीविका के साधनों की सुरक्षा, आत्मनिर्भरता बने तथा देश का विकास हो।

कौटिल्य के विचार से अर्थ का तात्पर्य है ऐसी भूमि या क्षेत्र जिस पर मनुष्य बसे हो । भूमि की प्राप्ति एवं उसकी रक्षा के उपायों को बताने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र है इसलिए व्यक्ति समाज और राज्य के जीवन में अर्थ अत्यंत महत्वपूर्ण है। कौटिल्य ने श्रम को ही वास्तविक अर्थ मानता है। जैसे जैसे श्रम की उत्पादकता बढ़ती है वैसे-वैसे आर्थिक साधन विकसित होते हैं तथा जन कल्याण एवम उसके साधनों का विस्तार करने की क्षमताओं में वृद्धि होती है। कौटिल्य की संपूर्ण अर्थ नीति और राजनीति का मूलाधार उसका कल्याणकारी आर्थिक दृष्टिकोण ही था । कौटिल्य ने स्पष्ट किया है कि राज्य जनता में समृद्धि और कल्याण के प्रसार के अपने दायित्व की पूर्ति के पश्चात ही उसे कर प्राप्त करने का अधिकारी होता है।कौटिल्य का यह चिंतन वर्तमान आर्थिक नीतियों के संदर्भ में बहुत महत्व का है।

एक कल्याणकारी राज्य स्वस्थ एवं सुदृढ़ अर्थव्यवस्था पर आधारित होता है।राज्य की सत्ता को मजबूत बनाने एवं उसके कल्याणकारी कार्यों की विस्तार के लिए आर्थिक सत्ता का विस्तार होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि जनता को सुरक्षा, न्याय एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले कल्याणकारी राज्य के लिए साधन संपन्न होना आवश्यक है। यही नियम आज के आर्थिक युग में लागू होता है।

कौटिल्य की आर्थिक नीतियां का मुख्य उद्देश्य राज्य की आंतरिक सुरक्षा बनाए रखना, ग्रामीण एवम शहरी लोगों की जीविका के साधनों को सुरक्षा प्रदान करना, प्रजा को आत्मनिर्भर बनाना, उनका कल्याण करना तथा देश का विकास करना था। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कौटिल्य ने आर्थिक नीति को कई भागों जैसे भूमि नीति ,कृषि एवं पशुपालन नीति ,औद्योगिक नीति व्यापारिक नीति और समाज से संबंधित आर्थिक नीतियों में विभाजित किया था ।

कौटिल्य ने औद्योगिकीकरण पर बल दिया है जिसके द्वारा व्यापार एवं पूंजी का निर्माण होता है। कौटिल्य ने राज्य से ऐसी आर्थिक नीति अपनाने की अपेक्षा की है जिसके द्वारा राज्य में व्यापार एवं वाणिज्य का प्रसार हो तथा जनता को आवश्यकता की वस्तुएं उपलब्ध हो सके तथा जनता को किसी भी वस्तु का अभाव नही हो। कल्याणकारी कार्यों के लिए कौटिल्य ने राजकोष मे वृद्धि को अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण माना है कौटिल्य के अनुसार जिस राजा का राजकोष जितना समृद्ध होगा वह राज्य उतना ही सुदृढ़ और कल्याणकारी बन सकेगा।

समृद्धि के लाभ सभी लोगों तक समान रूप से पहुंचे इसके लिए कौटिल्य वितरण के न्याय पूर्ण नियमों की भी स्थापना करते हैं।कौटिल्य ने कल्याणकारी आर्थिक नीतियों की सफलता के लिए नैतिकता पर विशेष बल दिया है। कौटिल्य प्रजा की क्षमता के अनुसार सापेक्षिक भार या कर के समर्थक है। उनकी सुस्पष्ट एवम प्रभावी कर व्यवस्था प्रत्येक नागरिक में कर्ज चुकाने के उत्तरदायित्व की भावना का विकास करती है अपितु कर चोरी एवम भ्रष्टाचार पर भी नियंत्रण की व्यवस्था करती है जो वर्तमान नीति निर्माताओं के लिए एक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है वर्तमान राज्य भी समाज के सभी वर्गों को बुनियादी सुविधाओं और कौशल निर्माण के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं और आर्थिक नीतियां बनती है परंतु प्रभावी क्रियान्वयन की कमी के कारण बहुत सारी लोक कल्याणकारी योजनाएं या तो अधूरी रह जाती है या उनके लाभ ठीक से उन लोगों तक नहीं पहुंचते जिन्हें इसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता है। इसके अलावा आर्थिक कल्याण की इन नीतियों का उद्देश्य स्वयं के

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 2
April - June | ISSN – 2584- 0517

राजनीतिक हितों की पूर्ति हेतु मुफ्त सुविधाए या वस्तुएं देने के लिए किया जाता है।इस कारण से कल्याणकारी अर्थव्यवस्था के वास्तविक एवं तात्विक उद्देश्य भटक जाते हैं।

शोध उद्देश्य:

- भारतीय चिंतक कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कल्याणकारी आर्थिक नीतियों का विश्लेषण करना भारतीयता पर आधारित कल्याणकारी अर्थव्यवस्था के कौटिल्य के आर्थिक मॉडल में वैश्विक आर्थिक समस्याओं के समाधान खोजना
- समकालीन भारत की कल्याणकारी योजनाओं का विश्लेषण करना एवं उनके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए कौटिल्य के सिद्धांतों का प्रयोग करना।
- वर्तमान कल्याणकारी बनाम मुफ्त सेवाओं एवं वितरण की समस्याओं से उत्पन्न प्रश्नों के समाधान कौटिल्य के चिंतन में खोजना।
- कौटिल्य के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की भारतीय मॉडल की प्रासंगिकता एवं महत्व को स्थापित करना।

उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण (Review of the literature)

कौटिल्य अर्थशास्त्र भारतीय ज्ञान परंपरा के महान ग्रंथ में से एक है। अर्थशास्त्र की रचना की पृष्ठभूमि में भारतीय ज्ञान परंपरा के शताब्दियों का चिंतन एवं व्यवहारिक समझ विद्यमान है। यद्यपि कौटिल्य अर्थशास्त्र मूल ग्रंथ पर अनेक टीकाऐ लिखी गई है एवं अनेक संस्कृत विद्वानों ने इस ग्रंथ का अनुशीलन एवं विवेचन किया है। **पंडित श्री राजेश्वर शास्त्री एवं पंडित जी गणपति शास्त्री** ने इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। यूरोप में **वॉल्टर रूबेन** ने कौटिल्य और मैक्यावली का तुलनात्मक अनुशीलन किया है।

वाचस्पति गैरोला ने कौटिलियम अर्थशास्त्र कौटिल्य के अर्थशास्त्र के विविध खंड और 15 अधिकरणों की विस्तार से व्याख्या की है।

मधुसूदन का शोध कार्य 'कौटिल्य का अर्थिक चिन्तन' 1994 ई० में क्लासिक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर से प्रकाशित है। यह 9 अध्यायों में विभक्त है, जिसमें कौटिल्य के आर्थिक चिन्तन का आधुनिक दृष्टि से वर्णन किया गया है।

त्रिपाठी राधावल्लभ, 1997,कौटिल्यअर्थशास्त्र एंड मॉडर्न वर्ल्ड, दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन - यह पुस्तक कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर किए गए राष्ट्रीय सेमिनार में प्राप्त कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण लेखों का संग्रह है जिनमें अर्थशास्त्र का सांस्कृतिक, दार्शनिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया है।

कांग्ले आर पी, कौटिल्य अर्थशास्त्र मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2010 वर्तमान संस्करण में तीन भाग शामिल हैं। भाग I अब तक उपलब्ध सभी पांडुलिपि साक्ष्यों के साथ-साथ प्रकाशित प्राचीन टिप्पणियों के अंशों पर आधारित पाठ का एक नया आलोचनात्मक संस्करण है। भाग II पाठ का नया अंग्रेजी अनुवाद है। भाग III पाठ का अध्ययन है और इसके अध्ययन के संबंध में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान करता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में कौटिल्य कालीन भारत की राजनीतिक- आर्थिक नीतियों को ऐतिहासिक शोध पद्धति के माध्यम से विश्लेषित किया गया है। इस हेतु तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को ऐतिहासिक दृष्टि से समझने के साथ साथ वर्तमान आर्थिक नीतियों विशेष रूप से कल्याणकारी नीतियों और योजनाओं का व्यावहारिक अध्ययन एवं विश्लेषण भी किया गया है। शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोतों में मुख्यतः कौटिल्य अर्थशास्त्र से संबंधित मूल ग्रंथ एवं पांडुलिपियों का अध्ययन शामिल है जबकि द्वितीयक स्त्रोत में कौटिल्य अर्थशास्त्र पर भारतीय एवं विदेशी विद्वानों द्वारा लिखीं गई टीकाऐ एवं पुस्तक इत्यादि सम्मिलित हैं ।इस अध्ययन में वर्तमान कल्याणकारी योजनाओ, आर्थिक नीतियों एवं विकास की समस्याओ का अध्ययन भी शामिल है जिससे उनके समाधान कौटिल्य के अर्थशास्त्र में खोजे जा

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 2
April - June | ISSN – 2584- 0517

सके। शोध विधि वर्णनात्मक, ऐतिहासिक अनुसंधान और सामग्री विश्लेषण पर आधारित है।

शोध परिणाम और निष्कर्ष (Findings and conclusion)

चाणक्य की आर्थिक नीतियां वर्तमान की अपेक्षा अधिक सुनियोजित और सुव्यवस्थित प्रतीत होते हैं क्योंकि कौटिल्य की लोक कल्याणकारी आर्थिक नीतियों एवं वितरण के न्याय पूर्ण सिद्धांत के कारण सभी क्षेत्रों में समान रूप से विकास एवं समृद्धि को बढ़ावा मिलता है जबकि वर्तमान की आर्थिक नीतियों के माध्यम से विकास संपूर्ण क्षेत्रों में ना होकर किसी विशेष क्षेत्र में हो रहा है साथ ही वह प्रकृति एवं पर्यावरण के लिए भी घातक सिद्ध हो रहा है। इस संदर्भ में हम कौटिल्य के आर्थिक नीतियों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।यद्यपि कौटिल्य का यह आर्थिक मॉडल आज के जटिल समाजों पर पूरी तरह लागू करना मुश्किल है परंतु वह मार्गदर्शन अवश्य प्रदान कर सकता है। कल्याणकारी अर्थव्यवस्था के कौटिलीय भारतीय मॉडल के व्यावहारिक प्रयोग वर्तमान में लोगों के समग्र कल्याण से संबंधित नीतियों एवं योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। कल्याणकारी अर्थशास्त्र का यह भारतीय मॉडल वर्तमान विश्व की असमान विकास एवं असंतोष, हिंसा संघर्ष एवं तनाव उत्पन्न करने वाली नीतियों के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य कर सकता है क्योंकि यह मॉडल लौकिक कल्याण के साथ-साथ नैतिक एवं पारलौकिक कल्याण पर आधारित है।

कौटिल्य की आर्थिक नीतियां और योजनाएं लोगों को सुरक्षा संरक्षण एवं सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर , उत्साही एवम अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।

कौटिल्य के कल्याणकारी अर्थशास्त्र का यह भारतीय मॉडल न केवल वर्तमान समय में भारत के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए एक संतुलित, कल्याणकारी एवं सभी की खुशहाली का आर्थिक मॉडल तैयार करने में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र के सूत्र वैश्विक स्तर पर मार्गदर्शन कर सकता है इसके लिए नीति निर्माताओं को प्रयास करना चाहिए। कौटिल्य के समान आज हमे भी लोगों की समग्र भलाई के लिए आत्मनिर्भर, उत्साहित एवं परिश्रमी बनाने वाली कल्याणकारी नीतियों पर बल देना चाहिए।

References

1. Altekar, A S , state and government in ancient India, Banaras,1949
2. Kangle R P, Kautilya Arthashastra Motilal Banarsidas Publishers, 2010
3. Tripathi Radhavallabh, 1997, kautilya's arthashastra and modern world, Delhi, Pratibha Prakashan
4. https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-editorials/from-welfarism-to-well-being
5. https://www.investopedia.com/terms/w/welfare_economics.asp
6. https://www.drishtiias.com/hindi/prelims-facts/important-schemes-and-programmes
7. https://www.geeksforgeeks.org/freebies-vs-welfare-schemes-and-its-impact-on-economy/
8. शास्त्री गणपति,2006,कौटिल्य अर्थशास्त्र, मूल टीका सहित, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली
9. कौटिल्य अर्थशास्त्र, व्याख्याकार वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी 2006
10. आर. शाम शास्त्री, कौटिल्य अर्थशास्त्र, मैसूर प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग हाउस, मैसूर 1960
11. कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण 13 वां अध्याय 6,7 , द्वितीय अधिकरण प्रथम अध्याय 9 ,10, 11, 12, 22, 24, 34, 35